अद्यास्य भित्तिषु मया निशि पाटितासु
छेदात् समासु सकृदर्पितकाकलीषु।
काल्यं विषादविमुखः प्रतिवेशवर्गो
दोषांश्च मैवदतु कर्मसु कौशलं च॥
आज रात में इस घर की दीवार में छेद कर दिया, ककलीयन्त्र के एक ही बार के आघात से यह मनोरम सुरङ्ग बन गया। प्रातः काल प्रसन्न होकर पड़ोसी लोग मेरे दोषों का तो बखान करेंगे ही, साथ ही साथ मेरे कार्य कौशल की भी प्रशंसा करेंगे।

मार्जारः प्लवने वृकोऽपसरणे श्येनो गृहालोकने
निद्रा सुप्तमनुष्यवीर्यतुलने संसर्पणे पन्नगः।
माया वर्णशरीरभेदकरणे वाग् देशभाषान्तरे
दीपो रात्रिषु सङ्कटे च तिमिरं वायुः स्थले नौर्जले
में कूदकर भागने में मार्जार, द्रुत गमन में ~~निद्रादेवी~~ वृक (भेड़िया

गृह के वस्तुओं को अवलोकन करने में बाज, सुप्तमनुष्य के वीर्य (बल) मापने में निद्रादेवी, चलने में सर्प के तुल्य, स्थूल शरीर के विश्लेषण करने में माया, देश देशान्तर की विभिन्न भाषा के विषय में वाग्देवी (सरस्वती) रात्रि में दीप, आपत्ति काल में अन्धकारतुल्य (अदृश्य) २ पृथ्वी पर वायु और जल में नौका की भाँति हूँ।

13) निःश्वासोऽस्य न शङ्कितो न विषमस्तुल्यान्तरं जायते
गात्रं सन्धिषु दीर्घतामुपगतं शय्याप्रमाणाधिकम्।
दृष्टिर्गाढनिमीलिता न चपलं पक्ष्मान्तरं जायते
दीपं चैव न मर्षयेदभिमुखः स्याल्लक्ष्यसुप्तो यदि।।

इसका श्वास निःशङ्क होकर, सम एवं तुल्यरूप में चल रहा है। शरीर की सन्धियों में फैलाव के कारण दीर्घता आ गई है, एवं शय्या के प्रमाण से वे अधिक लम्बी हो गई हैं। आँखें बन्द हैं एवं पलकें भी निश्चल हैं। यदि यह सोने का बहाना कर रहा होता तो सामने स्थित दीपक की रोशनी को सहन न कर पाता।

14) धिगस्तु खलु दारिद्र्यमनिर्वेदं च यौवनम्।
यदिदं दारुणं कर्म निन्दामि च करोमि च।
धिक्कार है मेरी दरिद्रता को तथा मेरे यौवन को जो प्रायश्चित से रहित (अतृप्त) है क्योंकि मैं बुरे कार्य की निन्दा भी कर रहा हूँ और फिर भी इसे कर रहा हूँ।

15) कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तूलयिष्यति।
शङ्कनीया हि लोकेषु निष्प्रभाना दरिद्रता।।
इस सही बात को कौन विश्वास करेगा, सब लोग मुझे ही चोर बताएँगे क्योंकि चोरी आदि दोषों के विषय में प्रभावहीन दरिद्रता सदा शंकास्पद होगी।

17) मयि द्रव्यक्षीणे स्त्रीद्रव्येणानुकम्पितः।
अर्थतः पुरुषो नारी या नारी सार्थतः पुमान्।।
मैं धन के नाश होने से दुर्बल दशा में स्त्रीरूप द्रव्य से अनुकंपित हुआ हूँ। [सचमुच जहाँ पुरुष अर्थहीन होने पर नारीतुल्य है तथा जो स्त्री है वह भी पुरुष की सहायता करने से पुरुष हो जाती है।]
(सचमुच जहाँ पुरुष नारीतुल्य हो गया वहाँ नारी वास्तव में पुरुष हो गई।)

18) अर्थेषु काममुपलभ्य मनोरथो मे
स्त्रीणां धनेष्वनुचितं प्रणयं करोति।
माने च कार्यकरणे च विलम्बमानो
धिग् भो! कुलं च पुरुषस्य दरिद्रतां च॥
धन के विषय में मेरा मनोरथ अत्यन्त तृप्ति को पाकर इस समय (स्वकीय) मानरक्षा करने में और कर्तव्य (न्यास-प्रत्यर्पण रूप) कार्य को करने में विलम्ब होता हुआ देखकर स्त्रियों के धन में अनुचित अनुराग दिखा रहा है। अतः इस मर्यादा से बढ़ उच्चकुल तथा दरिद्रता (दोनों) को धिक्कार हो।

19) यं समालक्ष्य विश्वासं न्यासोऽस्मासु कृतस्तया।
तस्यैतन्महतो मूल्यं प्रत्ययस्य प्रदीयताम्॥
जिस विश्वास के ऊपर उस (वसन्तसेना) ने मेरे पास धरोहर रखी, उस महान् विश्वास का मूल्यस्वरूप यह मुक्तावली तुम उसे दे दो।